



BHOPAL, FRIDAY, 24/03/2017

विधानसभा के मुक्ताकाश मंच में मंचित नाटक 'युगपुरुष : महात्मा के महात्मा' का एक दृश्य। फोटो : अनिल दीक्षित

## लहू को धोने लहू का इस्तेमाल करोगे, तो चादर लाल ही रहेगी

'युगपुरुष' के 275वें शो में 14 कलाकारों ने विधानसभा में खेला नाटक

### रश्मि प्रजापति •

'लहू के लाल रंग को धोने लहू का ही इस्तेमाल करोगे, तो चादर लाल ही रहेगी। जब हम प्राण लेने वाले सपने के प्रति भावुक नहीं होते, तो प्राण लेने वाले अंग्रेजों के प्रति हिंसक क्यों हो जाएं।' अहिंसा का वह पाठ गांधी जी ने अपने हमउम्र राजचंद्र से सीखा था। राजचंद्र और महात्मा गांधी के बीच संवादों और विचार मंथन का खूबसूरत दृश्य गुरुवार को विधानसभा में देखने को मिला। मौका था, 130 दिन पहले तैयार हुए नाटक 'युगपुरुष : महात्मा के महात्मा' के 275वें मंचन का।

राजेश जोशी द्वारा निर्देशित और उत्तम गडा लिखित प्रस्तुति में मंच पर 14 कलाकार 45 अलग-अलग किरदारों में नजर आए। नाटक की

शुरुआत उस सभा से हुई, जिसमें शामिल होने गांधी जा रहे थे और रास्ते में ही उनकी हत्या हो गई। इस सभा का विषय कुल्लू और नहीं बल्कि राजचंद्र थे, जिनके उपदेशों को गांधी जी आमजन से साझा करने वाले थे। प्रस्तुति में दिखाया गया कि, कैसे विलासित से लौटे मोहनदास अहंकार से भरे हुए हैं और राजचंद्र उनका पूरा अहंकार चूर-चूर कर देते हैं। सचमुच, गुण और मान प्राप्त करने के लिए कहीं जाने की जरूरत नहीं। ऐसे से जोहरी राजचंद्र उस वक्त भी लाखों का व्यापार करते थे, फिर भी इसका उनके व्यक्तित्व पर कोई प्रभाव नहीं दिखाता था, बल्कि उनकी यात्रा को अपने भीतर चल रही थी, स्वयं को समझने और मजबूत करने के लिए।

### नाटक के लिए छोड़ दी जाँच

नाटक में राजचंद्र का किरदार निभा रहे कलाकार पार्थसारथी वैद्य ने इन बातों को रेखांकित में करने के लिए अपनी जाँच छोड़ दी। वे मुंबई की एक मस्टीमीडिया कंपनी में डिप्टी मैनेजर के रूप में कार्य करते थे।



अपने शहर से बाहर रहना था, तो उन्होंने अपनी जाँच छोड़ी और फैमिली को किरदार व इसके पैरालिफिक मूवों की अहमियत समझाते हुए मैकेज करने को कहा।

### इस सीन पर खूब बर्जी तालियाँ



बूरे की खुशी के लिए घंटे का सैवा करने पर राजचंद्र ने कहा, 'धर्म का पालन सिर्फ पूर्णमा, परफेक्ट या फ्लॉयड के दिव, मॉडर, मॉडर, गुरुद्वारा व ईवईघंटों में होना चाहिए। तुम्हारे में या वरधार में नहीं, ऐस कोई विदम नहीं है।'